हिंदी बाल-पत्रिकाओं एवं हिंदी समाचार-पत्रों में बच्चों की दुनिया एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

राजपाल सिंह यादव*

पिछले एक दशक में जिस तरह डिजिटल संसार हावी हुआ है, उसके दूरगामी प्रभाव समाज में लक्षित हो रहे हैं। इसका प्रतिकूल प्रभाव बच्चों के सहज विकास एवं उनकी शैक्षिक क्षमता के विकास पर पड़ा है। आज बच्चे नियमित शिक्षा के अतिरिक्त पाठन और चिंतन से विमुख हो रहे हैं और इस कारण उनकी सृजनात्मकता की परिधि सिमटी है और उनमें नकारात्मक वृत्तियाँ लक्षित हो रही हैं। इसी क्रम में हिंदी बाल-पत्रिकाओं एवं हिंदी समाचार-पत्रों की उल्लेखनीय भूमिका पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। बाल-पत्रिकाओं ने बच्चों की सर्जनात्मक प्रतिभा को विकसित करने के साथ, उनके ज्ञान और संवेदना के विकास में भी लंबे समय से प्रमुख भूमिका निभाई है। पत्रिकाओं का बच्चों के शैक्षिक विकास से जीवंत संबंध है। इन्हीं बिंदुओं को समाहित करते हुए बाल-पत्रिकाओं की बच्चों की शिक्षा में क्या महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है, इस पर इस लेख में विचार किया गया है।

बाल-पत्रिकाओं का साहित्य एवं चिंतन जगत में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। जिन पत्रिकाओं में बाल-केंद्रित साहित्य प्रकाशित होता है, वे बाल-पत्रिकाओं की श्रेणी में आती हैं। बाल-पत्रिकाओं का प्रकाशन मुख्यत: तीन बिंदुओं पर आधारित होता है— मनोरंजन, शिक्षा और बच्चों की भावना को प्रेषित करना। बाल-पत्रिकाओं में जो कुछ भी छपता है, वह इन्हीं तीन दृष्टिकोणों से आप्लावित रहता है। बाल साहित्य का उद्देश्य मनोरंजन मात्र नहीं है हालांकि यह मानने वालों की कमी नहीं है कि और ऐसे लोग भी हैं जो मानते हैं कि बाल-पत्रिकाओं का उद्देश्य मनोरंजन होना चाहिए। प्रत्येक बच्चा अपने परिवार, समाज, कक्षा तथा अन्य विविध प्रकार की शिक्षा से घिरा होता है इसलिए उसके लिए ऐसे साहित्य की अपेक्षा की जाती है जो उसके लिए आनंददायक हो। दूसरा वर्ग ऐसा भी है जो बाल-पत्रिकाओं का उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा को भी मानता है। इस वर्गानुसार बच्चों का मनोरंजन आवश्यक है लेकिन बच्चों

* *शोधार्थी,* शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

को नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करना भी उतना ही ज़रूरी है ताकि वह बच्चा अपने समाजानुकूल बन सके। इस तरह मनोरंजन के साथ-साथ परोक्ष रूप से वह मूल्यों का आत्मसात कर सकेगा तथा उनसे अभिप्रेरणा भी ग्रहण करेगा। इसलिए यह वर्ग मानता है कि बाल-पत्रिकाओं का मूल उद्देश्य शिक्षा प्रदान करना है, मनोरंजन तो उस पर लिपटा हुआ मात्र आकर्षक आवरण है। एक तीसरा वर्ग भी है जो बच्चों की पत्रिकाओं के उद्देश्य का निर्धारण बाल भावनाओं के इर्द-गिर्द करना चाहता है। इनके अनुसार बच्चों के लिए मनोरंजन और शिक्षा दोनों ज़रूरी है लेकिन फिर भी बाल-पत्रिकाएँ बच्चों की रुचि, परिवेश और भावना के अनुरूप होनी चाहिए और यही सबसे ज़्यादा ज़रूरी भी है। वर्तमान समय के बच्चों का परिवेश पहले से भिन्न है। वे वैज्ञानिक युग में बड़े हो रहे हैं, लोकतांत्रिक समाज में जी रहे हैं और उनकी कोमल बाल-मनोभावनाएँ सबको एक नज़रिए से देखना चाहती हैं। हमें उनके इस नज़रिए को उड़ान देने की आवश्यकता है।

हिंदी समाचार-पत्रों व बाल-पत्रिकाओं में बच्चों की दुनिया की एक समृद्ध परंपरा रही है। आज बाल साहित्य की विकास यात्रा एक शताब्दी पार कर चुकी है। विधिवत रूप में बाल साहित्य की शुरुआत भारतेंदु युग से होती है। भारतेंदु हरिश्चंद्र की प्रेरणा से बच्चों की पहली पत्रिका *बालदर्पण* का प्रकाशन सन् 1882 में प्रारंभ हुआ। भारतेंदु ने स्वयं *बालाबोधिनी* नाम से महिलाओं के लिए पत्रिका निकाली, जिसमें बालिकाओं के लिए सिलाई-कढ़ाई, चूल्हा-चौका तथा अन्य सामाजिक विषयों पर रोचक सामग्री प्रकाशित की गई। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कुछ पहेलियाँ तथा मुकरियाँ भी लिखी हैं। उन्होंने अपने नाटकों में कहीं-कहीं सरल भाषा में कई रोचक पदों की रचना भी की है, जिनसे बच्चों का भरपूर मनोरंजन होता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र के समकालीन श्रीधर पाठक ने बच्चों के लिए बिल्ली, कुत्ता, कोयल, तोता, मैना जैसे सुपरिचित विषयों पर मनोहारी बाल कविताएँ लिखी हैं। इन कविताओं का संकलन *मनोविनोद* नामक पुस्तक में किया गया है। हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में बच्चों की दुनिया का इतिहास पुराना है।

आज समाज में बच्चों की पृथक-पृथक महत्वकांक्षाओं पर काफ़ी चर्चा हो रही है। अपने भविष्य को लेकर बच्चे काफ़ी संजीदा हैं, करियर से लेकर कलात्मक रुचि में अलग-अलग तरह की महत्वकांक्षाएं साफ़ नज़र आती हैं। वहीं इस दौरान बच्चों के लिए अनेक रोचक पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं। आजकल बाल साहित्य की अधिक चर्चा होने लगी है अर्थात आज बाल-साहित्य के महत्व को समझा जा रहा है। यह बाल-साहित्य के आने वाले समय के लिए एक शुभ संकेत है।

शैक्षिक बाल साहित्य को हम तीन रूपों में देख सकते हैं— सूचनात्मक, विचारात्मक तथा भावनात्मक। जिनमें सीधे-सीधे सूचनाएँ दी जाती हैं, वे सूचनात्मक रचनाएँ होती हैं। ऐसी रचनाओं में 'इसे पहचानो', 'क्या आप जानते हैं?' जैसे शीर्षकों के अंतर्गत चित्र सहित या चित्र रहित सामग्री प्रकाशित होती है। विचारात्मक शैक्षिक बाल साहित्य के अंतर्गत विविध संदर्भों से जुड़े आलेख आते हैं। भावनात्मक शैक्षिक बाल साहित्य में वे रचनाएँ

© NCERT not to be republished

आती हैं जिनके द्वारा बच्चों की मनोभावना को छूकर उन्हें मनोवांछित शिक्षा देने की कोशिश की जाती है। अधिकांशत: पाया जाता है कि बाल साहित्य से संबंधित समाचार-पत्रों में बहुत कम सामग्री प्रकाशित होती है तथा बच्चों द्वारा लिखित प्रकाशित सामग्री उससे भी कम होती है। इसके अलावा यह भी पाया कि अंग्रेज़ी के समाचार-पत्र बच्चों के लिए विशेष समाचार-पत्र प्रकाशित करते हैं। ये समाचार-पत्र विद्यालय में बच्चों को उपलब्ध करवाए जाते हैं, जैसे *हिंदुस्तान* और *टाइम्स ऑफ़ इंडिया* बच्चों के लिए अलग से समाचार-पत्र का अंक निकालते हैं जो *हिंदुस्तान टाइम्स* और *टाइम्स ऑफ़ इंडिया* के नाम से ही प्रकाशित होते हैं लेकिन हिंदी में इस प्रकार से बच्चों के लिए कोई अलग से समाचार पत्र प्रकाशित नहीं होते। इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

बाल साहित्य के तौर पर बच्चों के लिए छपने वाली बाल-पत्रिकाओं की सामग्री कैसी हो? उन पत्रिकाओं के लिए बाल साहित्य के चयन का आधार क्या हो? वह बच्चों द्वारा ही रचित होनी चाहिए या बड़ों द्वारा लिखी हुई होनी चाहिए? इस प्रकार के अनेक सवालों को समझने के लिए बाल साहित्य से संबंधित ज्ञान एवं समझ होना एक अनिवार्य शर्त है। इससे संबंधित बाल साहित्य पर लिखी गई कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों को देखा जा सकता है। जयप्रकाश भारती द्वारा लिखित *बाल-पत्रकारिता: स्वर्ण युग की ओर* पुस्तक में बाल-पत्रकारिता के विकास तथा इसके स्वरूप का विश्लेषणात्मक चित्रण किया गया है। प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार अपनी पुस्तक *बच्चे की भाषा और अध्यापक* में बाल कविताओं और कहानियों के संदर्भ में बाल-पत्रकारिता की ओर संकेत करते हैं। *चिल्ड्रंस वर्ल्ड* के संपादक नवीन मेनन मानते हैं कि बच्चों के विकास के लिए, साथ ही देश के निर्माण के लिए बाल-पत्रिकाएँ बेहद महत्वपूर्ण हैं। देवेंद्र दत्त तिवारी *बाल साहित्य की मान्यताएँ एवं आदर्श* पुस्तक में बाल साहित्य और हिंदी पत्रकारिता के बीच के संबंध को दृढ़ करने पर ज़ोर देते हैं। इसी तरह मनोहर वर्मा *मधुमती* पत्रिका में बाल साहित्य का विवेचन करते हुए, बाल साहित्य में बाल जीवन के चित्रण को निरूपित करके देखते हैं। बड़े होकर बच्चा बनना एवं उनकी तरह सोचना काफ़ी कठिन कार्य है और उससे भी अधिक कठिन है बच्चों के अनुकूल लिखना, इसीलिए जो लोग बाल साहित्य की रचना करते हैं वे एक दुर्लभ कार्य करते हैं। उनका कार्य, साधना का कार्य है। मनोरंजन बाल साहित्य का प्रमुख अंग है। वास्तव में बाल साहित्य कहलाने का अधिकारी वही साहित्य है जिसमें बच्चे रस ले सकें तथा अपनी भावनाओं और कल्पनाओं का विकास कर सकें। इस प्रकार बाल साहित्य से संबंधित पुस्तकें पढ़कर इस विषय के क्षेत्र में अपने ज्ञान का विस्तार किया जा सकता है। बाल साहित्य प्रकाशित करने वालों के लिए ऐसी पुस्तकें पढ़ना अत्यंत महत्वपूर्ण भी है।

आज कई बड़े प्रकाशन समूह बाल-पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहे हैं। इन पत्रिकाओं में बच्चों के लिए प्रचुर सामग्री होती है। हिंदुस्तान टाइम्स समूह की *नंदन* पत्रिका अत्यधिक लोकप्रिय है। इसकी शुरुआत पंडित नेहरू की स्मृति में सन् 1964 में हुई थी। *नंदन* की कहानियाँ प्रमुख रूप से पौराणिक अथवा परियों से संबंधित ही हुआ करती थीं लेकिन

© NCERT not to be republished

अब समकालीन विषयों से संबंधित कहानियाँ भी प्रकाशित की जाने लगी हैं। दिल्ली प्रेस प्रकाशन समूह की *चंपक* पत्रिका हिंदी के साथ ही अन्य कई क्षेत्रीय भाषाओं में प्रकाशित हो रही है। *चंपक* पत्रिका की कहानियों के अधिकतर पात्र जानवर होते हैं। इसमें विज्ञान से संबंधित कहानियों को भी प्रकाशित किया जाता है। एकलव्य संस्था द्वारा भोपाल से प्रकाशित होने वाली *चकमक* पत्रिका भी खूब लोकप्रिय है। इस पत्रिका को बच्चों के साथ-साथ बड़े भी चाव से पढ़ते हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन से पहले बाल साहित्य के नाम पर केवल उपदेशात्मक कहानियाँ ही पढ़ने को मिलती थीं और सभी उसी तरह की रचनाओं को पढ़ने के आदी भी हो गए थे। लेकिन *चकमक* ने उस मिथक को तोड़ा है। *चकमक* पत्रिका ने बच्चों में उनके समय, समाज, परिवेश एवं प्रकृति के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। *बाल भारती* भारत सरकार के प्रकाशन विभाग की ओर से बच्चों के लिए प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका है। इनके अलावा *चंदामामा*, *बालहंस*, *देवपुत्र* आदि प्रमुख बाल-पत्रिकाएँ हैं। इन पत्रिकाओं के साथ ही राष्ट्रीय हिंदी दैनिक *नवभारत टाइम्स*, *दैनिक जागरण*, *दैनिक हिंदुस्तान*, *जनसत्ता*, *राष्ट्रीय सहारा*, *अमर उजाला* आदि अखबारों में सप्ताह में एक दिन बच्चों के लिए विशेष परिशिष्ट का प्रकाशन किया जाता है। इस पृष्ठ की सामग्री में कथा, कविता, चुटकुले, पहेलियाँ आदि के साथ ज्ञान-विज्ञान तथा गणितीय जानकारियाँ भी होती हैं।

बच्चों के लिए लिखना आसान नहीं होता और बाल-मनोविज्ञान को समझे बिना बाल साहित्य की रचना करना भी संभव नहीं है। बाल साहित्य जितना आसान और सरल दिखता है, सर्जन के स्तर पर वह उतना ही कठिन होता है। 1968 से पूर्व का अधिकांश बाल साहित्य बड़ों द्वारा लिखा गया है लेकिन आज परिस्थितियाँ पहले से भिन्न हैं। वर्तमान समय में बाल साहित्य लेखन में बच्चे भी रुचि दिखा रहे हैं। बच्चों की कल्पनाएँ और अनुभव सर्वथा बड़ों से भिन्न ही होते हैं। उनकी दुनिया भी बड़ों की दुनिया से भिन्न होती है। जो कुछ बड़ों के जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण समझा जाता है, वही बच्चों की दुनिया के लिए महत्वहीन हो सकता है और जो कुछ बच्चों के जीवन के लिए ज़रूरी एवं मूल्यवान होता है, वही बड़ों के लिए गैर ज़रूरी एवं मूल्यहीन हो सकता है। अतः बाल साहित्य लिखने में वही व्यक्ति सफल हो सकता है जो अपने बड़प्पन को ताक पर रखकर बच्चे की तरह सरलता, कौतूहल, जिज्ञासा जैसे भावों को स्वाभाविक रूप से अपने अंत:करण में धारण कर सके। व्यावहारिक रूप से बच्चों द्वारा रचित रचनाओं को अधिकाधिक सामने लाने में *चकमक*, *बालहंस* एवं *समझ झरोखा* ने सराहनीय भूमिका निभाई है। इन पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाओं पर भी बड़ों की इच्छाओं या मान्यताओं के प्रभाव स्पष्ट तौर पर देखे जा सकते हैं। इसके बावजूद इन रचनाओं में बच्चों की निश्छल भावनाओं से जुड़ी रचनाएँ भी प्रकाशित हुई हैं। *चकमक* ने बच्चों की रचनाओं का संकलन कर उन्हें प्रकाशित करने का सराहनीय कार्य भी किया है। ये पत्रिकाएँ बच्चों की सृजनात्मकता को निरंतर सामने लाने के लिए सक्रिय रही हैं। बाल-पत्रिकाओं द्वारा विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन भी

© NCERT not to be republished

किया जाता है ताकि बच्चों की रचनात्मकता का कोई भी पहलू, किसी भी रूप में प्रकट होने से वंचित न रह जाए। इस संदर्भ में *चकमक*, *झरोखा*, *बालहंस*, *समय* और *बालदर्शन* पत्रिकाओं के नाम लिए जा सकते हैं। बाल-पत्रिकाओं में नियमित रूप से चित्र कथाएँ भी छपती हैं। *बालहंस*, *चंपक*, *नंदन*, *सुमन सौरभ*, *बाल भारती*, *लोट-पोट*, *मधु मुस्कान*, *नन्हे सम्राट*, *शिशु सौरभ* आदि पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से चित्रकथाओं के कुछ स्तंभ प्रकाशित होते हैं। *बालहंस* एवं *चंपक* ने चित्रकथा विशेषांक भी प्रकाशित किए हैं।

यह समझने की आवश्कयता है कि बाल-पत्रिकाओं में ऐसी क्या बात है जो बच्चों के लिए आकर्षक पृष्ठ भूमिका निर्माण करती है। इन पत्रिकाओं में प्रकाशित बाल-सामग्री का अर्थ मनोरंजन मात्र नहीं है बल्कि उससे कहीं अधिक है। हिंदी समाचार-पत्रों एवं हिंदी बाल-पत्रिकाओं को शैक्षिक संदर्भ के लिए सार्थक एवं उपयोगी बनाया जा सकता है। इसके लिए कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विचार करना आवश्यक है। जैसे हिंदी समाचार-पत्र व पत्रिकाओं में बच्चों के लिए प्रकाशित होने वाली सामग्री किस प्रकार बच्चों की दुनिया को प्रकट करती है? हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में बच्चों के लिए जो प्रकाशित रचनाएँ हैं उनमें बच्चों के मनोविज्ञान तथा उनके सामाजिक जीवन का कहाँ तक ख्याल रखा गया है? प्रकाशित होने वाली रचनाओं में बच्चों के अनुभवों को कितना सम्मिलित किया गया है? इन रचनाओं द्वारा बच्चों की कल्पनाशीलता एवं सृजनात्मकता को कितना प्रोत्साहन मिल रहा है? ये रचनाएँ बच्चों के लिए कितनी रुचिकर, मनोरंजक तथा प्रेरणादायक हैं? इन तमाम सवालों को ध्यान में रखकर बाल-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाए। इन पत्रिकाओं को शिक्षा-व्यवस्था का अभिन्न अंग बनाया जाए, इससे बच्चों को बच्चों को ठोस धरती मिल सकेगी, उन्हें उड़ने के लिए स्वच्छंद आकाश मिलेगा, उनके लिए धूप भी छाँव-सी बन जाएगी, मूलत: यही सही मायने में बाल-सामग्री का अर्थ भी है।

बाल साहित्य को बच्चों को यथार्थ से जोड़ने की कड़ी में भी देखा जा सकता है। बाल साहित्य द्वारा बच्चों की भाषा और उनके शब्दकोश का विकास होता है तथा इससे बच्चों में किताबों के प्रति रुचि भी उत्पन्न होती है इसलिए बाल-पत्रिकाओं की उपयोगिता और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। बाल-पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियों, किस्सों और कविताओं के माध्यम के जरिए बच्चों में न केवल पढ़ने की रुचि का विकास होता है अपितु चुटकुलों और पहेलियों के माध्यम से खेल-खेल में वह भाषा की जटिलताओं को भी सीखता है। इसके अलावा पत्रिकाओं में प्रकाशित चित्रकला, शब्द-खेल, गलतियाँ ढूँढ़ना, बिंदु मिलाकर चित्रों का निर्माण करना, सामग्री को सही ढंग से व्यवस्थित करना, छोटा रास्ता ढूँढ़कर कहीं पहुँचाना जैसे खेलों द्वारा बच्चों का बौद्धिक विकास होता है और उनकी सृजनात्मक क्षमता भी बढ़ती है। इन सबके द्वारा खेल-खेल में ही बच्चे को अनेक विषयों का ज्ञान तो होता ही है, साथ ही उसमें उन विषयों के प्रति रोचकता का विकास भी होता है। इसके अलावा बाल-पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री द्वारा बच्चा अपने समाज की विसंगतियों के प्रति भी जागरुक होता है। जैसे प्रकृति का जो ह्रास हो रहा है, उसे बचाने में वह कैसे मदद कर सकते हैं,

© NCERT not to be republished

चीज़ों का उचित इस्तेमाल करना और जो पुरानी वस्तुएँ हैं उनका इस्तेमाल अपनी रचनात्मक प्रतिभा के द्वारा नए रूप में कैसे किया जाए, इन सबकी प्रेरणा भी बच्चों को बाल-पत्रिकाएँ पढ़ने से मिलती है। इस प्रकार बाल-पत्रिकाएँ बच्चे के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती हैं। इसलिए आज हमें इस विषय पर थोड़ा ठहरकर विचार करने और उन विचारों को व्यावहारिक रूप देने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

भले ही आज बाल-पत्रिकओं एवं समाचार पत्रों की लोकप्रियता कम हो गई हो किंतु बच्चों के विकास में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता। पारंपरिक पत्र-पत्रिकाओं का स्थान आज डिजिटल माध्यम पर प्रकाशित होने वाली बाल-सामग्री ने ले लिया है। आज डिजिटल माध्यम पर जो बाल सामग्री प्रकाशित हो रही है, वह पारंपरिक पत्र-पत्रिकाओं के समान बच्चों को भले ही न बाँधती हो किंतु बच्चों की कलात्मक अभिव्यक्ति एवं उनके भविष्य के निर्धारण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। बच्चों के लिए यह आवश्यक है कि वह इन सामग्रियों का सृजनात्मक प्रयोग करें और अपनी इच्छाओं एवं रुचियों को विकसित करें। बाल पत्र-पत्रिकाओं को केवल मनोरंजन सामग्री के रूप में नहीं देखना चाहिए बल्कि उनको इस दृष्टिकोण से भी देखना चाहिए कि उन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली सामग्री किस प्रकार से बच्चों की अभिरुचि एवं उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ाने का कार्य भी करती है।

संदर्भ

कुमार, कृष्ण. 1990. *बच्चे की भाषा और अध्यापक— एक निर्देशिका*. नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली.

———. 2012. शिक्षा और बाल साहित्य. *शैक्षणिक संदर्भ*. अंक 80. (मार्च-अप्रैल) एकलव्य, भोपाल.

कोहन, मैनन. 1989. *रिसर्च मैथड्स इन एजुकेशन*. 11 न्यू फिटरलेन, न्यूयार्क.

चंपक. जून, 2019. प्रेस भवन, दिल्ली.

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका. दिसंबर 2019. एकलव्य, भोपाल.

जैन, अभिनेष कुमार. 2003. *हिंदी बाल साहित्य: प्राचीन एवं आधुनिक दृष्टि*. नीरज बुक सेंटर, दिल्ली.

देवसरे, हरिकृष्ण. 1969. *हिंदी बाल साहित्य एक अध्ययन*. आत्माराम एंड संस, नयी दिल्ली.

नंदन. हिंदुस्तान मीडिया वेंचर्स लिमिटेड, नोएडा.

बालहंस. राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, जयपुर.

भारती, जयप्रकाश. 1993. *बाल पत्रकारिता— स्वर्ण युग की ओर*. प्रतिभा प्रिंटर्स, दिल्ली.

मृगेश, माणिक. 2006. *समाचार पत्रों की भाषा*. वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

© NCERT not to be republished